Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

JOURNAL OF SCIENTIFIC LETTERS
www.jslsci.com

सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश के राजनीतिक योगदानका अध्ययन

Ram Bujharat Yadav

Research Scholar, Sabarmati University, Ahmedabad, Gujarat

Dr. Sunil Kumar Chaturvedi

Research Supervisor, Sabarmati University, Ahmedabad, Gujarat

सारांश

सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश दिल्ली सल्तनत के प्रारम्भिक इतिहास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण शासक के रूप में प्रतिष्ठित है। उसके शासनकाल ने दिल्ली सल्तनत को राजनीतिक अस्थिरता, क्षेत्रीय विद्रोहों और बाहरी चुनौतियों से निकालकर एक संगठित एवं शक्तिशाली राज्य के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इल्तुतमिश ने सत्ता संभालने के बाद विभिन्न तुर्क अमीरों और प्रतिद्वंद्वी शासकों की चुनौतियों का सामना किया तथा दिल्ली की केंद्रीय सत्ता को सुदृढ़ किया। उसने यल्दौज और कुबाचा जैसे प्रतिद्वंद्वियों को पराजित कर दिल्ली सल्तनत के राजनीतिक प्रभुत्व को मजबूत किया। बंगाल, बिहार, सिंध तथा राजपूत क्षेत्रों में सैन्य अभियानों के माध्यम से उसने सल्तनत के प्रभाव का विस्तार किया। मंगोल आक्रमण के समय उसकी दूरदर्शी कूटनीति ने दिल्ली सल्तनत को गंभीर संकट से बचाने में सहायता की। इसके अतिरिक्त, उसने प्रशासनिक व्यवस्था को व्यवस्थित किया और शक्तिशाली तुर्क अमीरों के समूह को संगठित करके केंद्रीय शासन को स्थायित्व प्रदान किया। अब्बासी खलीफा से मान्यता प्राप्त करना भी उसकी राजनीतिक प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाला महत्वपूर्ण कदम था।

मुख्यशब्द-शम्सुद्दीन इल्तुतमिश, दिल्ली सल्तनत, राजनीतिक योगदान, तुर्क शासन, केंद्रीय सत्ता, सैन्य अभियान, राजनीतिक वैधता, मध्यकालीन भारत।

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

प्रस्तावना

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में दिल्ली सल्तनत की स्थापना एक महत्वपूर्ण राजनीतिक परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करती है। बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी के संक्रमणकाल में उत्तर भारत में राजनीतिक सत्ता अनेक क्षेत्रीय शक्तियों में विभाजित थी। मुहम्मद गौरी की विजयों के पश्चात् भारत में तुर्क सत्ता का विस्तार तो हुआ, लेकिन उसके निधन के बाद उसके द्वारा स्थापित राजनीतिक व्यवस्था के सामने अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हो गईं। कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली में तुर्क शासन की नींव को आगे बढ़ाया, किंतु उसकी आकस्मिक मृत्यु के कारण सत्ता में स्थायित्व नहीं आ सका। उसके उत्तराधिकारी आरामशाह को भी राजनीतिक विरोध का सामना करना पड़ा। ऐसी परिस्थितियों में शम्सुद्दीन इल्तुतमिश का उदय हुआ, जिसने दिल्ली सल्तनत को वास्तविक राजनीतिक संगठन और स्थायित्व प्रदान किया।इल्तुतमिश मूलतः तुर्क दास था, लेकिन अपनी योग्यता, सैन्य क्षमता और राजनीतिक दूरदर्शिता के कारण वह उच्च पदों तक पहुँचा। कुतुबुद्दीन ऐबक के शासनकाल में उसकी प्रतिभा स्पष्ट रूप से सामने आई और बाद में वह दिल्ली की सत्ता का प्रमुख दावेदार बना। जब उसने शासन संभाला, तब दिल्ली सल्तनत की स्थिति अत्यंत अस्थिर थी। अनेक प्रांतीय शासक स्वतंत्र होने का प्रयास कर रहे थे और तुर्क अमीरों के बीच भी सत्ता के लिए संघर्ष चल रहा था। इसलिए इल्तुतमिश के सामने सबसे बड़ी चुनौती दिल्ली की केंद्रीय सत्ता को सुरक्षित करना और विभिन्न विद्रोही शक्तियों को नियंत्रित करना था।

इल्तुतमिश के राजनीतिक योगदान का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष दिल्ली सल्तनत का सुदृढ़ीकरण था। उसने प्रारम्भ में अपने प्रमुख प्रतिद्वंद्वियों का सामना किया। पंजाब और उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में ताजुद्दीन यल्दौज उसकी सत्ता के लिए चुनौती बना हुआ था। इल्तुतमिश ने यल्दौज को पराजित करके दिल्ली की राजनीतिक स्थिति को मजबूत किया। इसी प्रकार सिंध और मुल्तान क्षेत्र में नासिरुद्दीन कुबाचा की स्वतंत्र सत्ता को भी उसने समाप्त किया। इन सफलताओं से दिल्ली की केंद्रीय सत्ता का प्रभाव बढ़ा और सल्तनत के विखंडन की संभावना कम हुई।

बंगाल और बिहार में भी इल्तुतमिश ने केंद्रीय सत्ता स्थापित करने का प्रयास किया। इन क्षेत्रों में स्थानीय तुर्क शासकों ने दिल्ली से स्वतंत्र होने की प्रवृत्ति अपनाई थी। इल्तुतमिश ने सैन्य अभियानों तथा राजनीतिक रणनीति के माध्यम से इन क्षेत्रों को पुनः दिल्ली सल्तनत के प्रभाव में लाया। इससे सल्तनत की राजनीतिक सीमा विस्तृत हुई और दिल्ली के सुल्तान की सर्वोच्चता स्थापित हुई। उसके शासनकाल में राजपूत शक्तियों के विरुद्ध भी अभियान चलाए गए। रणथंभौर, जालौर तथा अन्य क्षेत्रों में तुर्क सत्ता के प्रभाव को बढ़ाने के प्रयास किए गए। यद्यपि सभी क्षेत्रों पर स्थायी नियंत्रण स्थापित करना संभव नहीं था, फिर भी इन अभियानों ने दिल्ली सल्तनत की राजनीतिक शक्ति को प्रदर्शित किया।

इल्तुतमिश की राजनीतिक सफलता का एक अन्य महत्वपूर्ण आधार उसकी कूटनीतिक दूरदर्शिता थी। उसके

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

शासनकाल में मध्य एशिया में चंगेज खान के नेतृत्व में मंगोल शक्ति का तीव्र विस्तार हो रहा था। ख्वारिज्म के शासक जलालुद्दीन मंगबर्नी भारत की ओर आया और उसने इल्तुतमिश से सहयोग की अपेक्षा की। इल्तुतमिश ने अत्यंत सावधानी से इस स्थिति का सामना किया। उसने मंगबर्नी के साथ ऐसा प्रत्यक्ष गठबंधन नहीं किया जिससे मंगोलों की शत्रुता दिल्ली सल्तनत के विरुद्ध हो जाए। इस प्रकार उसकी तटस्थ और व्यावहारिक नीति ने दिल्ली सल्तनत को तत्कालीन मंगोल संकट से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इल्तुतमिश ने दिल्ली सल्तनत को राजनीतिक वैधता प्रदान करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कार्य किया। उसे अब्बासी खलीफा से औपचारिक मान्यता प्राप्त हुई। इससे दिल्ली के सुल्तान की स्थिति केवल एक क्षेत्रीय सैन्य शासक के रूप में नहीं रही, बल्कि उसे इस्लामी राजनीतिक व्यवस्था में वैध शासक के रूप में प्रतिष्ठा मिली। यह मान्यता उसके शासन की प्रतिष्ठा और राजनीतिक अधिकार को मजबूत करने में सहायक बनी। इससे दिल्ली सल्तनत के शासन को वैधानिक आधार प्राप्त हुआ और अन्य तुर्क अमीरों के सामने सुल्तान की सर्वोच्चता स्थापित करने में सहायता मिली।

इल्तुतमिश ने केंद्रीय सत्ता को मजबूत करने के लिए योग्य और विश्वसनीय अमीरों का एक प्रभावशाली समूह भी विकसित किया, जिसे इतिहास में 'चहलगानी' या 'चालीसा' के नाम से जाना जाता है। इसका उद्देश्य शासन में सक्षम तुर्क अधिकारियों की सहायता लेना था। यद्यपि बाद के समय में यही शक्तिशाली अमीर राजनीतिक हस्तक्षेप करने लगे, लेकिन इल्तुतमिश के समय में इस समूह ने शासन संचालन और केंद्रीय सत्ता को स्थिर करने में महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

उसकी राजनीतिक दृष्टि का एक महत्वपूर्ण पक्ष उत्तराधिकार की समस्या के प्रति उसकी सजगता भी थी। उसने अपनी पुत्री रजिया को उत्तराधिकारी के रूप में योग्य समझा। इससे यह स्पष्ट होता है कि वह केवल वंशगत उत्तराधिकार पर निर्भर न रहकर शासकीय योग्यता को भी महत्व देता था। रजिया को उत्तराधिकारी बनाने का उसका निर्णय मध्यकालीन राजनीतिक इतिहास में विशेष महत्व रखता है।

इल्तुतमिश का राजनीतिक योगदान बहुआयामी था। उसने सैन्य शक्ति, कूटनीति, प्रशासनिक संगठन, राजनीतिक वैधता और केंद्रीयकरण के माध्यम से दिल्ली सल्तनत को एक स्थायी राजनीतिक संस्था का रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसके शासनकाल में दिल्ली सल्तनत ने जिस प्रकार संगठित स्वरूप प्राप्त किया, उसने आगे के सुल्तानों के लिए एक मजबूत आधार तैयार किया। इसलिए इल्तुतमिश को दिल्ली सल्तनत के वास्तविक संस्थापकों में प्रमुख स्थान दिया जाता है।

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

इल्तुतमिश का राजनीतिक एवं सैन्य सुदृढ़ीकरण

शम्सुद्दीन इल्तुतमिश के शासनकाल का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष दिल्ली सल्तनत का राजनीतिक एवं सैन्य सुदृढ़ीकरण था। जब इल्तुतमिश ने दिल्ली की सत्ता संभाली, उस समय सल्तनत की स्थिति पूरी तरह स्थिर नहीं थी। कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार संबंधी संघर्ष उत्पन्न हो चुका था और विभिन्न तुर्क अमीर तथा प्रांतीय शासक अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे। दिल्ली की केंद्रीय सत्ता को पंजाब, सिंध, बंगाल, बिहार तथा राजपूत क्षेत्रों में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा था। ऐसी परिस्थितियों में इल्तुतमिश ने सैन्य शक्ति और राजनीतिक दूरदर्शिता का प्रयोग करते हुए सल्तनत को संगठित और सुदृढ़ बनाया।

इल्तुतमिश के सामने सबसे पहली बड़ी चुनौती ताजुद्दीन यल्दौज की थी। यल्दौज स्वयं को उत्तर भारत में तुर्क सत्ता का प्रमुख उत्तराधिकारी मानता था और दिल्ली की राजनीति में हस्तक्षेप कर रहा था। इल्तुतमिश ने उसके विरुद्ध सैन्य अभियान चलाकर उसे पराजित किया। इस विजय से दिल्ली के सुल्तान की सर्वोच्चता स्थापित हुई और पंजाब तथा उत्तर भारत में उसकी राजनीतिक स्थिति मजबूत हुई। इसके बाद इल्तुतमिश ने नासिरुद्दीन कुबाचा की शक्ति को चुनौती दी, जो मुल्तान और सिंध के क्षेत्रों में अपनी स्वतंत्र स्थिति बनाए हुए था। क्रमिक सैन्य अभियानों के माध्यम से इल्तुतमिश ने इन क्षेत्रों पर दिल्ली की केंद्रीय सत्ता का प्रभाव स्थापित किया।

बंगाल और बिहार में भी इल्तुतमिश की सैन्य नीति महत्वपूर्ण रही। इन क्षेत्रों के शासक दिल्ली की केंद्रीय सत्ता से अलग होकर स्वतंत्र रूप से शासन करने का प्रयास कर रहे थे। इल्तुतमिश ने सैन्य अभियानों के माध्यम से बंगाल और बिहार को पुनः सल्तनत के अधीन लाने का प्रयास किया। इन अभियानों से दिल्ली की राजनीतिक प्रतिष्ठा बढ़ी तथा दूरस्थ प्रांतों में सुल्तान की सर्वोच्चता स्वीकार की गई। हालांकि इन क्षेत्रों पर नियंत्रण बनाए रखना लगातार चुनौतीपूर्ण रहा, फिर भी इल्तुतमिश ने यह स्पष्ट कर दिया कि दिल्ली की केंद्रीय सत्ता कमजोर नहीं है।

राजपूत शक्तियाँ भी दिल्ली सल्तनत के विस्तार और स्थायित्व के लिए महत्वपूर्ण चुनौती थीं। इल्तुतमिश ने रणथंभौर, जालौर और अन्य राजपूत क्षेत्रों के विरुद्ध अभियान चलाए। इन अभियानों का उद्देश्य केवल क्षेत्रीय विस्तार नहीं था, बल्कि दिल्ली के आसपास तथा महत्वपूर्ण सामरिक क्षेत्रों में तुर्क सत्ता को सुरक्षित करना भी था। इससे सल्तनत के प्रमुख मार्गों और राजनीतिक केंद्रों पर नियंत्रण मजबूत हुआ।

इल्तुतमिश की सैन्य नीति केवल युद्ध और विजय तक सीमित नहीं थी। उसने परिस्थितियों के अनुसार कूटनीति का भी उपयोग किया। चंगेज खान के नेतृत्व में मंगोल शक्ति के विस्तार के समय उसने अत्यंत सावधानी

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

बरती। जलालुद्दीन मंगबर्नी के भारत आगमन के दौरान इल्तुतमिश ने ऐसी नीति अपनाई जिससे दिल्ली सल्तनत अनावश्यक रूप से मंगोल संघर्ष में न फँसे। उसकी व्यावहारिक कूटनीति ने सल्तनत की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राजनीतिक सुदृढ़ीकरण के लिए इल्तुतमिश ने शक्तिशाली तुर्क अमीरों को अपने शासन-तंत्र में संगठित किया। चहलगानी अथवा 'चालीसा' के गठन ने प्रशासन और सैन्य व्यवस्था में प्रभावशाली अधिकारियों को एक संगठित आधार प्रदान किया। इससे सुल्तान को शासन संचालन में सहायता मिली और केंद्रीय सत्ता को तत्कालीन परिस्थितियों में मजबूती प्राप्त हुई।

इल्तुतमिश की प्रशासनिक एवं केंद्रीयकरण की नीति

शम्सुद्दीन इल्तुतमिश का शासनकाल दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था के विकास और केंद्रीय सत्ता के सुदृढ़ीकरण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था। जब उसने सत्ता ग्रहण की, उस समय दिल्ली सल्तनत राजनीतिक रूप से अस्थिर थी और अनेक प्रांतीय शासक तथा शक्तिशाली अमीर अपनी स्वतंत्र स्थिति बनाए रखने का प्रयास कर रहे थे। ऐसी परिस्थितियों में इल्तुतमिश ने प्रशासन को व्यवस्थित करने, सुल्तान की सर्वोच्चता स्थापित करने तथा विभिन्न क्षेत्रों को केंद्रीय शासन के अधीन रखने के लिए अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए। उसकी प्रशासनिक नीति का मूल उद्देश्य ऐसी शासन-व्यवस्था विकसित करना था जिसमें राजनीतिक नियंत्रण का केंद्र दिल्ली और सुल्तान हो।

इल्तुतमिश ने प्रशासन में योग्य और विश्वसनीय तुर्क अधिकारियों को महत्वपूर्ण पद प्रदान किए। उसने प्रशासनिक एवं सैन्य अधिकारियों को विभिन्न क्षेत्रों की जिम्मेदारियाँ सौंपकर शासन-व्यवस्था को व्यवस्थित किया। उसके शासन में**इक़्ता व्यवस्था**को अधिक संगठित रूप मिला। अधिकारियों और सैन्य सरदारों को वेतन के बदले निश्चित क्षेत्रों से राजस्व प्राप्त करने का अधिकार दिया जाता था। इन क्षेत्रों को इक़्ता कहा जाता था और उनके अधिकारियों को मुक्ता या इक़्तादार कहा जाता था। इस व्यवस्था से सुल्तान को विशाल क्षेत्र पर प्रशासनिक एवं सैन्य नियंत्रण बनाए रखने में सहायता मिली। साथ ही, आवश्यकता पड़ने पर इन अधिकारियों से सैनिक सहायता भी प्राप्त की जा सकती थी।

इल्तुतमिश ने केंद्रीय प्रशासन में सुल्तान की भूमिका को सर्वोच्च बनाया। उसने शक्तिशाली अमीरों की स्वेच्छाचारिता को नियंत्रित करने का प्रयास किया और यह सुनिश्चित किया कि प्रांतीय अधिकारी केंद्रीय सत्ता के प्रति उत्तरदायी रहें। उसके शासन में प्रशासनिक अधिकारियों की नियुक्ति और उनके कार्यों पर नियंत्रण सुल्तान की शक्ति का महत्वपूर्ण आधार था। इस प्रकार उसने दिल्ली को सल्तनत की राजनीतिक एवं

प्रशासनिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बनाया।

केंद्रीयकरण की नीति में इल्तुतमिश द्वारा शक्तिशाली तुर्क अमीरों के संगठन का भी महत्वपूर्ण स्थान था। उसने योग्य तुर्क अधिकारियों का एक प्रभावशाली समूह तैयार किया, जिसे बाद में**चहलगानी अथवा चालीसा**के नाम से जाना गया। इसका उद्देश्य शासन के महत्वपूर्ण कार्यों में सक्षम अधिकारियों का सहयोग प्राप्त करना था। यद्यपि बाद के काल में चहलगानी के अमीर अत्यधिक शक्तिशाली हो गए और उन्होंने सुल्तान की सत्ता को प्रभावित किया, लेकिन इल्तुतमिश के शासनकाल में इस समूह ने प्रशासन को संगठित करने में सहायता प्रदान की।

उसकी प्रशासनिक नीति का एक महत्वपूर्ण पक्ष राजस्व व्यवस्था को व्यवस्थित करना था। राज्य की आर्थिक शक्ति मुख्यतः कृषि से प्राप्त राजस्व पर निर्भर थी। इसलिए विभिन्न प्रांतों से नियमित राजस्व प्राप्त करना केंद्रीय सत्ता के लिए आवश्यक था। इल्तुतमिश ने अधिकारियों के माध्यम से राजस्व संग्रह की व्यवस्था को मजबूत किया तथा राज्य की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रशासनिक नियंत्रण बढ़ाया।

इल्तुतमिश ने मुद्रा व्यवस्था में भी महत्वपूर्ण सुधार किए। उसने**चाँदी का टंका और ताँबे का जीतल**प्रचलित किया। मानकीकृत मुद्रा व्यवस्था ने व्यापार तथा राजस्व प्रशासन को व्यवस्थित करने में सहायता की और सल्तनत की आर्थिक एवं राजनीतिक प्रतिष्ठा को बढ़ाया। मुद्रा पर सुल्तान की सत्ता का प्रदर्शन उसकी संप्रभुता का महत्वपूर्ण प्रतीक था।

प्रशासनिक केंद्रीयकरण के साथ इल्तुतमिश ने न्याय और कानून-व्यवस्था को भी महत्व दिया। सुल्तान सर्वोच्च राजनीतिक और न्यायिक अधिकार का केंद्र था तथा विभिन्न स्तरों पर अधिकारियों के माध्यम से प्रशासन चलाया जाता था। विद्रोहों और अव्यवस्था को नियंत्रित करके उसने राज्य में राजनीतिक स्थिरता स्थापित करने का प्रयास किया। इससे दिल्ली सल्तनत के प्रशासनिक ढाँचे को अपेक्षाकृत स्थायी स्वरूप प्राप्त हुआ।

इल्तुतमिश ने अपने उत्तराधिकार के प्रश्न पर भी राजनीतिक दूरदर्शिता दिखाई। उसने अपनी पुत्री रजिया को योग्य उत्तराधिकारी के रूप में देखा, क्योंकि उसके अनुसार शासन के लिए योग्यता और क्षमता महत्वपूर्ण थी। यह निर्णय उसके प्रशासनिक और राजनीतिक विवेक को प्रदर्शित करता है।

इल्तुतमिश की कूटनीति एवं बाहरी चुनौतियों का सामना

सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश के शासनकाल में दिल्ली सल्तनत को अनेक बाहरी राजनीतिक एवं सैन्य चुनौतियों का सामना करना पड़ा। तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में उत्तर भारत की राजनीतिक स्थिति अस्थिर थी और मध्य एशिया में मंगोल शक्ति तेजी से उभर रही थी। इसके अतिरिक्त पंजाब, सिंध, मुल्तान,

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

बंगाल तथा राजपूत क्षेत्रों में ऐसी शक्तियाँ सक्रिय थीं, जो दिल्ली की केंद्रीय सत्ता के लिए चुनौती उत्पन्न कर रही थीं। इन परिस्थितियों में इल्तुतमिश ने केवल सैन्य शक्ति पर निर्भर न रहकर कूटनीति, राजनीतिक समझ और परिस्थितिनुसार निर्णय लेने की नीति अपनाई। उसकी कूटनीतिक सफलता ने दिल्ली सल्तनत को अनेक गंभीर संकटों से सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इल्तुतमिश के सामने सबसे बड़ी बाहरी चुनौती मंगोल शक्ति का उदय था। चंगेज खान के नेतृत्व में मंगोल साम्राज्य मध्य एशिया से तेजी से विस्तार कर रहा था। इसी समय ख्वारिज्म का शासक जलालुद्दीन मंगबर्नी मंगोलों से संघर्ष करते हुए भारत की सीमा तक पहुँचा। उसने इल्तुतमिश से सहयोग और आश्रय की अपेक्षा की। यदि इल्तुतमिश तत्काल उसके पक्ष में खड़ा हो जाता, तो चंगेज खान की शत्रुता दिल्ली सल्तनत की ओर आकर्षित हो सकती थी। इसलिए इल्तुतमिश ने अत्यंत सावधानी से इस परिस्थिति का सामना किया और मंगबर्नी के साथ ऐसा प्रत्यक्ष गठबंधन नहीं किया जिससे मंगोलों को भारत पर आक्रमण का अवसर मिलता। उसकी यह नीति उसकी राजनीतिक दूरदर्शिता का महत्वपूर्ण उदाहरण मानी जाती है।

इल्तुतमिश की कूटनीति का एक प्रमुख गुण परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेने की क्षमता थी। उसने यह समझ लिया था कि उस समय मंगोलों जैसी विशाल सैन्य शक्ति से सीधे टकराना दिल्ली सल्तनत के लिए अत्यंत जोखिमपूर्ण हो सकता था। इसलिए उसने प्रत्यक्ष संघर्ष से बचते हुए अपने राज्य की आंतरिक शक्ति को मजबूत करने पर ध्यान दिया। इस नीति के परिणामस्वरूप दिल्ली सल्तनत तत्कालीन मंगोल संकट से सुरक्षित रही और इल्तुतमिश को राज्य के संगठन एवं विस्तार के लिए आवश्यक समय मिला।

पश्चिमोत्तर क्षेत्रों में भी इल्तुतमिश को राजनीतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। ताजुद्दीन यल्दौज ने दिल्ली और उत्तर भारत में अपनी राजनीतिक श्रेष्ठता स्थापित करने का प्रयास किया। इल्तुतमिश ने सैन्य शक्ति का प्रयोग करते हुए उसे पराजित किया। इस विजय का कूटनीतिक महत्व भी था, क्योंकि इससे दिल्ली के सुल्तान की सर्वोच्चता को चुनौती देने वाली एक प्रमुख शक्ति समाप्त हो गई। इसी प्रकार नासिरुद्दीन कुबाचा ने मुल्तान और सिंध में अपनी स्थिति मजबूत कर रखी थी। इल्तुतमिश ने क्रमशः उसकी शक्ति को समाप्त करके पश्चिमी क्षेत्रों में दिल्ली की स्थिति को सुदृढ़ किया।

बंगाल और बिहार की स्थिति भी केंद्रीय सत्ता के लिए चुनौतीपूर्ण थी। वहाँ के शासक दिल्ली से स्वतंत्र होने की कोशिश कर रहे थे। इल्तुतमिश ने इन क्षेत्रों में सैन्य अभियान चलाने के साथ-साथ राजनीतिक नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास किया। उसने स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अपनी नीति बनाई और आवश्यकता के अनुसार सैन्य शक्ति तथा राजनीतिक समझ का प्रयोग किया। इससे दिल्ली सल्तनत का प्रभाव पूर्वी भारत तक मजबूत हुआ।

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

 Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

राजपूत राज्यों के साथ भी इल्तुतमिश के संबंध चुनौतीपूर्ण रहे। अनेक राजपूत शासक दिल्ली की बढ़ती शक्ति का विरोध कर रहे थे। इल्तुतमिश ने रणथंभौर, जालौर और अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों की ओर सैन्य अभियान किए। इन अभियानों का उद्देश्य दिल्ली की राजनीतिक सुरक्षा के साथ-साथ सामरिक मार्गों और महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित करना था। राजपूत शक्तियों के विरुद्ध उसकी नीति में सैन्य दबाव के साथ राजनीतिक व्यावहारिकता भी दिखाई देती है।

इल्तुतमिश की कूटनीतिक उपलब्धियों में उसकी राजनीतिक वैधता की स्थापना विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उसने अब्बासी खलीफा से औपचारिक मान्यता प्राप्त की। इससे दिल्ली के सुल्तान की प्रतिष्ठा इस्लामी राजनीतिक संसार में बढ़ी और उसके शासन को वैधता प्राप्त हुई। यह मान्यता उसके लिए केवल धार्मिक सम्मान का विषय नहीं थी, बल्कि राजनीतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण थी। इससे उसके प्रतिद्वंद्वियों के विरुद्ध उसकी स्थिति मजबूत हुई और दिल्ली सल्तनत की स्वतंत्र राजनीतिक पहचान को स्वीकार्यता मिली।

इल्तुतमिश ने बाहरी चुनौतियों का सामना करते हुए सैन्य शक्ति को भी व्यवस्थित रखा। उसने योग्य सैन्य अधिकारियों को महत्वपूर्ण पद दिए तथा आवश्यकता के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों में सैनिक अभियान चलाए। उसके लिए सेना केवल विजय का साधन नहीं थी, बल्कि केंद्रीय सत्ता की सुरक्षा और प्रांतीय नियंत्रण का महत्वपूर्ण आधार थी। सैन्य शक्ति और कूटनीतिक नीति के बीच संतुलन स्थापित करना उसकी शासन-व्यवस्था की प्रमुख विशेषता थी।

अतः इल्तुतमिश की कूटनीति व्यावहारिक, सावधानीपूर्ण और परिस्थितिनुकूल थी। उसने मंगोल संकट में प्रत्यक्ष टकराव से बचकर, यल्दौज और कुबाचा जैसे प्रतिद्वंद्वियों को नियंत्रित करके, राजपूत एवं प्रांतीय शक्तियों पर दबाव बनाकर तथा खलीफा से मान्यता प्राप्त करके दिल्ली सल्तनत की राजनीतिक स्थिति को मजबूत किया। उसकी सफलता इस बात में थी कि उसने प्रत्येक चुनौती का उत्तर केवल युद्ध के माध्यम से नहीं दिया, बल्कि आवश्यकता के अनुसार कूटनीति और सैन्य शक्ति का संतुलित प्रयोग किया। इसी कारण इल्तुतमिश को दिल्ली सल्तनत के प्रारम्भिक चरण का एक कुशल कूटनीतिज्ञ और दूरदर्शी राजनीतिक शासक माना जाता है।

दिल्ली सल्तनत के राजनीतिक विकास में इल्तुतमिश का योगदान

दिल्ली सल्तनत के राजनीतिक विकास में सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक था। यद्यपि दिल्ली में तुर्क शासन की प्रारम्भिक नींव कुतुबुद्दीन ऐबक ने रखी थी, लेकिन उसे एक संगठित, स्थिर और प्रभावशाली राजनीतिक सत्ता का स्वरूप प्रदान करने का श्रेय मुख्यतः इल्तुतमिश को दिया

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com

जाता है। जब उसने दिल्ली की सत्ता संभाली, तब सल्तनत अनेक आंतरिक एवं बाहरी चुनौतियों से घिरी हुई थी। विभिन्न तुर्क अमीर अपनी स्वतंत्र स्थिति स्थापित करना चाहते थे, प्रांतीय शासक केंद्रीय सत्ता को चुनौती दे रहे थे और राजपूत शक्तियाँ भी अपने क्षेत्रों में पुनः प्रभाव स्थापित करने का प्रयास कर रही थीं। इन परिस्थितियों में इल्तुतमिश ने सैन्य शक्ति, प्रशासनिक संगठन और कूटनीतिक दूरदर्शिता के माध्यम से दिल्ली सल्तनत के राजनीतिक विकास की मजबूत आधारभूमि तैयार की।

इल्तुतमिश का सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक योगदानकेंद्रीय सत्ता का सुदृढ़ीकरणथा। उसने यह सुनिश्चित किया कि दिल्ली का सुल्तान सल्तनत का सर्वोच्च राजनीतिक अधिकारी हो। ताजुद्दीन यल्दौज और नासिरुद्दीन कुबाचा जैसे शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वियों को नियंत्रित करके उसने दिल्ली की केंद्रीय सत्ता के सामने उपस्थित गंभीर चुनौतियों को समाप्त किया। इन सफलताओं से दिल्ली के सुल्तान की राजनीतिक प्रतिष्ठा बढ़ी और विभिन्न क्षेत्रों में उसकी सर्वोच्चता स्वीकार की जाने लगी।

सल्तनत केक्षेत्रीय विस्तार और राजनीतिक एकीकरणमें भी इल्तुतमिश की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उसने बंगाल और बिहार जैसे पूर्वी क्षेत्रों में दिल्ली की सत्ता को पुनः स्थापित किया। पश्चिम में मुल्तान और सिंध की ओर भी उसने अपनी राजनीतिक शक्ति का विस्तार किया। राजपूत क्षेत्रों के विरुद्ध सैन्य अभियानों के माध्यम से उसने दिल्ली के आसपास के सामरिक क्षेत्रों पर अपना प्रभाव मजबूत किया। इससे सल्तनत केवल दिल्ली और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों तक सीमित नहीं रही, बल्कि एक व्यापक राजनीतिक सत्ता के रूप में विकसित हुई।

इल्तुतमिश की उपलब्धियों का एक महत्वपूर्ण पक्षराजनीतिक वैधता की स्थापनाथा। उसे अब्बासी खलीफा से औपचारिक मान्यता प्राप्त हुई। इससे उसकी सत्ता को व्यापक इस्लामी राजनीतिक जगत में वैधता मिली और दिल्ली सल्तनत की प्रतिष्ठा बढ़ी। यह मान्यता उसके प्रतिद्वंद्वियों पर उसकी राजनीतिक श्रेष्ठता स्थापित करने में भी सहायक हुई। इस प्रकार इल्तुतमिश ने दिल्ली की सत्ता को केवल सैन्य विजय पर आधारित शासन से आगे बढ़ाकर वैधानिक राजनीतिक संस्था का रूप देने का प्रयास किया।

उसनेइक़्ता व्यवस्थाको संगठित करके राजनीतिक एवं प्रशासनिक नियंत्रण को मजबूत किया। विभिन्न क्षेत्रों की जिम्मेदारी अधिकारियों को सौंपकर उनसे राजस्व संग्रह और सैन्य सहायता प्राप्त की जाती थी। इस व्यवस्था ने विशाल क्षेत्र पर केंद्रीय सत्ता का नियंत्रण बनाए रखने में सहायता की। इल्तुतमिश ने शक्तिशाली अमीरों को शासन व्यवस्था में शामिल किया और योग्य तुर्क अधिकारियों का संगठन विकसित किया, जिसे चहलगानी या चालीसा के नाम से जाना गया। इससे प्रशासनिक संचालन में सहायता मिली और तत्कालीन परिस्थितियों में केंद्रीय सत्ता को मजबूती प्राप्त हुई।

इल्तुतमिश के राजनीतिक विकास मेंमुद्रा व्यवस्थाका भी महत्वपूर्ण स्थान था। उसने चाँदी के टंके और ताँबे के जीतल को व्यवस्थित रूप से प्रचलित किया। मानकीकृत मुद्रा ने राज्य की आर्थिक व्यवस्था को स्थिरता प्रदान की और सुल्तान की संप्रभुता को स्पष्ट किया। मुद्रा पर शासक की सत्ता का प्रदर्शन राजनीतिक वैधता और राज्य की एकता का प्रतीक भी था।

मंगोल चुनौती के प्रति इल्तुतमिश की नीतिउसकी राजनीतिक दूरदर्शिता का महत्वपूर्ण उदाहरण थी। चंगेज खान के नेतृत्व में मंगोल शक्ति के विस्तार के समय इल्तुतमिश ने जलालुद्दीन मंगबर्नी के प्रश्न पर अत्यंत सावधानी बरती। उसने ऐसी नीति अपनाई जिससे दिल्ली सल्तनत अनावश्यक रूप से मंगोल संघर्ष में न फँसे। इस व्यावहारिक कूटनीति के कारण सल्तनत को तत्कालीन बाहरी संकट से बचने और अपनी आंतरिक शक्ति को विकसित करने का अवसर मिला।

इल्तुतमिश नेउत्तराधिकार के प्रश्नपर भी राजनीतिक दृष्टि का परिचय दिया। उसने अपनी पुत्री रजिया को योग्य उत्तराधिकारी के रूप में देखा और उसके शासन संबंधी गुणों को स्वीकार किया। यद्यपि उसके निधन के बाद उत्तराधिकार का प्रश्न जटिल हुआ, फिर भी उसका निर्णय इस बात को दर्शाता है कि वह शासन के लिए योग्यता और क्षमता को महत्व देता था।

इल्तुतमिश का राजनीतिक योगदान केवल उसके तत्कालीन शासन तक सीमित नहीं रहा। उसके द्वारा स्थापित प्रशासनिक एवं राजनीतिक संस्थाओं ने बाद के सुल्तानों को शासन संचालन के लिए आधार प्रदान किया। उसने दिल्ली सल्तनत को ऐसी राजनीतिक संरचना दी जिसमें केंद्रीय सत्ता, प्रांतीय प्रशासन, सैन्य संगठन और वैधानिक अधिकार परस्पर जुड़े हुए थे। इसी कारण इतिहास में उसे दिल्ली सल्तनत कावास्तविक संस्थापक और सुदृढ़ीकरणकर्ताकहा जाता है।अतः दिल्ली सल्तनत के राजनीतिक विकास में इल्तुतमिश की भूमिका बहुआयामी थी। उसने आंतरिक विद्रोहों को नियंत्रित किया, प्रतिद्वंद्वी शक्तियों को पराजित किया, सल्तनत की सीमाओं और प्रभाव का विस्तार किया, प्रशासनिक एवं आर्थिक संस्थाओं को व्यवस्थित किया तथा कूटनीति के माध्यम से बाहरी खतरों से राज्य की रक्षा की। उसके शासनकाल में दिल्ली सल्तनत ने जिस राजनीतिक स्थिरता और संगठन को प्राप्त किया, वही आगे चलकर सल्तनत के दीर्घकालीन विकास का आधार बना।

निष्कर्ष

सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश का राजनीतिक योगदान दिल्ली सल्तनत के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण और दूरगामी प्रभाव वाला था। उसने ऐसे समय में सत्ता संभाली जब दिल्ली सल्तनत आंतरिक संघर्षों, प्रांतीय विद्रोहों और बाहरी खतरों से घिरी हुई थी। अपनी सैन्य क्षमता और राजनीतिक दूरदर्शिता के माध्यम से उसने यल्दौज

Online ISSN: 2456-1495
CODEN (USA): JSLOBJ

तथा कुबाचा जैसे प्रतिद्वंद्वियों को पराजित किया और दिल्ली की केंद्रीय सत्ता को सुदृढ़ बनाया। बंगाल, बिहार तथा राजपूत क्षेत्रों में अभियानों द्वारा उसने सल्तनत के राजनीतिक प्रभाव का विस्तार किया। मंगोलों के बढ़ते प्रभाव के समय उसकी व्यावहारिक कूटनीति ने दिल्ली सल्तनत की सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अब्बासी खलीफा से प्राप्त मान्यता ने उसके शासन को राजनीतिक और धार्मिक वैधता प्रदान की। चहलगानी जैसे प्रभावशाली अमीरों के संगठन तथा योग्य उत्तराधिकारी के चयन की उसकी नीति भी उसके राजनीतिक विवेक को दर्शाती है। यद्यपि उसके शासन की कुछ व्यवस्थाओं में बाद में समस्याएँ उत्पन्न हुईं, फिर भी उसके समय में स्थापित केंद्रीय सत्ता और राजनीतिक संगठन ने दिल्ली सल्तनत को स्थायित्व प्रदान किया। इसलिए इल्तुतमिश को केवल एक विजेता शासक के रूप में नहीं, बल्कि दिल्ली सल्तनत के सुदृढ़ीकरण और राजनीतिक संस्थागत विकास के प्रमुख निर्माता के रूप में देखा जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कांबले, सयाली। (2023)। मध्यकालीन भारत में चिकित्सा का विकास और उन्नति : दिल्ली सल्तानों का युग। जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड ह्यूमैनिटीज, 6, 105-110। doi:10.53469/jssh.2023.06(08).21।

2. शम्सुद्दीन, सलाहुद्दीन एवं लुबिस, टोनांग। (2023)। सूफ़ीवाद और उदार सूफ़ीवाद का उद्भव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड ह्यूमन रिसर्च, 6। doi:10.47191/ijsshr/v6-i12-91।

3. साहिदुल, हसन। (2014)। सल्तनती बंगाल में धार्मिक बहुलतावाद। XXIII, 29-50।

4. डे, शैकत एवं अल-अमीन, मोहम्मद एवं राशिद, तस्लीम उर एवं सुल्तान, ज़ाकिर एवं अशादुज़्ज़मान, एम.डी. एवं सरकार, मिथुन एवं शम्सुद्दीन, सैयद। (2016)। रेमाज़ोल रेड के लिए अवशोषक के रूप में चिटोसान की तैयारी, विशेषताएँ एवं प्रदर्शन मूल्यांकन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लेटेस्ट रिसर्च इन इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, 2, 52-62।

5. शम्सुद्दीन, सलाहुद्दीन एवं मोहद डॉन, ज़ुरैदाह। (2013)। अरब-इस्लामी विज्ञानों के विकास पर अनुवाद का प्रभाव। जर्नल ऑफ लैंग्वेज एंड लिटरेचर (JLL), 4। doi:10.7813/jll.2013/4-1/1।

6. शम्सुद्दीन, सलाहुद्दीन। (2012)। अन्य धर्मों के अनुयायियों के प्रति इस्लाम का व्यवहार। ब्रिटिश जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज़, 6, 10-21।

E-mail: ***editor.jslsci888@gmail.com***

7. सुराया, सैदातुल एवं सुलैमान, शम्सुद्दीन एवं मोहद अली, मुनीरा एवं अब्दुल अज़ीज़, फ़ज़ीला। (2014)। एल्यूमिनियम आधारित धातु मैट्रिक्स समिश्र के सूक्ष्म संरचना और यांत्रिक गुणों पर TiC कणों का प्रभाव। एडवांस्ड मैटेरियल्स रिसर्च, 903, 145-150। doi:10.4028/www.scientific.net/AMR.903.145।

8. शम्सुद्दीन, सलाहुद्दीन। (2023)। इस्लामी उर्दू साहित्य : भारतीय उपमहाद्वीप का एक विधर्मी इस्लामी साहित्य। एडवांसेज़ इन सोशल साइंसेज़ रिसर्च जर्नल, 10, 378-389। doi:10.14738/assrj.106.14920।

9. ख़ान, एम.डी. शम्सुद्दीन सुल्तान। (2017)। एंजियोजेनेसिस-सम्बंधित रोगों में इंटरल्यूकिन 17A अगली पीढ़ी का सबसे संभावित औषधीय लक्ष्य क्यों है। जर्नल ऑफ एंजियोथेरेपी, 1, E030-E032। doi:10.25163/angiotherapy.11000671608100517।

10. एलियस, मोहम्मद एवं ख़ान, इशा एवं मोहद नोर, मोहद रोसलान एवं मुनीम, अब्दुल एवं मंसूर, फ़ादिल्लाह एवं यूसुफ़, ज़ुल्किफ़ली। (2020)। मध्यकालीन बंगाल में अन्य धर्मों के प्रति मुस्लिम व्यवहार। SAGE Open, 10, 1-14। doi:10.1177/2158244020970546।

E-mail: editor.jslsci888@gmail.com